Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 07, (दिसंबर, 2024)
पृष्ठ संख्या 35–40

गर्भवती खरगोश और नवजात (किट्स) की देखभाल और प्रबंधन

पवन कुमार[1] एवं करन महर[2]

[1]पशु चिकित्सालय, बिजावल, बाड़मेर (राजस्थान पशुपालन विभाग)
[2]भा.कृ.अनु.प. –राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा, भारत।

Email Id: – pawankumawat249@gmail.com

परिचय –

खरगोश छोटा, दौड़ने वाला जानवर है, जिसके संबंधित छोटे कान और पैर होते हैं जो अंधे, बहरे और नग्न बच्चों को जन्म देते हैं हालांकि जन्म के बाद वे ठीक से विकसित होने लगते हैं। गर्भावस्था के दौरान, मां खरगोश को संतुलित पोषण, साफ पानी और गर्भवती मादा और नवजात किट्स के अच्छे प्रबंधन की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था खरगोश की गर्भावस्था की अवधि लगभग 31 दिन होती है। गर्भावस्था के दौरान कुछ विशेष देखभाल की जानी चाहिए। मादा प्रति प्रसव में 1–14 बच्चे और साल में 4–8 बच्चे देती हैं। कभी–कभी मादा खरगोश मे आभासी गर्भावस्था भी देखने को मिलती है, इस मामले में मादा खरगोश आमतौर पर गर्भावस्था के समान लक्षण दिखाती हैं जैसे घोसले बनाना। इसलिए गर्भावस्था की देख रेख के लिये गर्भावस्था के लक्षणो की पहचान (गर्भावस्था निदान) महत्वपूर्ण है। गर्भवती मादा, गर्भावस्था के दौरान विभिन्न लक्षणो जैसे घोसले बनाना, गर्भवती मादा मे चिड़चिड़ापन, बाल खींचना, पिंजरे के अंदर गडे खोदने और आक्रामक लक्षण गर्भावस्था के लगभग 21 दिन के बाद दिखाती है।

गर्भावस्था निदान –

गर्भवती मादा के पेट पाल्पेटेशन (पेट को हल्के से दबाकर गर्भ की पहचान) को महसूस करके और परीक्षण संबंधित ब्रीडिंग द्वारा। गर्भावस्था का निदान पेट के पाल्पेटेशन विधि द्वारा 14 दिन के गर्भावस्था पर किया जाना चाहिए। पेट के पाल्पेटेशन के दौरान पेट को हल्के हाथों से छूना चाहिए क्योंकि पतली दीवार वाले अंतःजल आसानी से चोट लगा सकते हैं। गर्भवती स्थिति के दौरान गर्भाशय को पेट के उदर पक्ष में महसूस किया जा सकता है। एक गर्भावस्था मादा को एक गैर चिकनी सतह पर धीरे से रखना चाहिये ताकि मादा सही से आराम कर सके क्योंकि यदि वह डर जाती है तो पेट के मांसपेशियां मे तनाव के कारण पाल्पेशन कठिन हो सकता है। गर्भवती मादा को पकड़ते समय विशिश्ट ध्यान रखना जरुरी है। जिससे की गर्भवती मादा को तनाव की स्थिति जैसे कि शोर, गरम और गीली मौसम, विषाक्त सुगंध आदि से बचाया जा सकता है।

पोषणः

गर्भवती मादा खरगोश को सामन्यत हमउम्र और समान आकार की सामन्य मादा से अधिक पोषण की आवश्यकता होती है। खरगोश आमतौर पर सभी प्रकार के अनाज (जैसे ज्वार, बाजरा और अन्य अनाज) और दालों का सेवन करते हैं। हरे चारे जैसे रिजका, अगथी, डेस्मांथस, गाजर, पत्ता गोभी और अन्य सब्जी के अपशिष्ट भी हैं। गर्भवती खरगोश को लगभग 150 ग्राम प्रति दिन का कंसेंट्रेट

(अनाज) खाद्य और 200 ग्राम प्रति दिन का हरा चारा की आवश्यकता होती है।

पोषण प्रकार	रखरखाव के लिए	गर्भावस्था के लिए	दूधारण के लिए
डी ई (किलो कैलोरी)	2500	2300	2500
प्रोटीन :	18	16	17
फाइबर :	10–13	13–14	10–13
वसा :	2	2	2

दूधारण:

केवल लैकटोज घटक के अलावा खरगोश का दूध गाय के दूध से अधिक अधिक सघन होता है । खरगोश का दूध नवजातो खरगोशों के लिए पोषक तत्वो का अच्छा स्रोत होता है।

दूधारण मादा खरगोश का पोषण:

दूधारण खरगोश के पोषण का ख्याल खुद दूधारण मादा और उनके बच्चों के लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है। दूधारण करने वाली खरगोश को पर्याप्त अच्छी गुणवत्ता वाले अनाज (जैसे ज्वार, बाजरा और अन्य अनाज), हरा चारा, और साफ पानी की पर्याप्त व्ययस्था करना चाहिए ताकि दूधारण खरगोश की पोषण मांग को पूरा किया जा सके। सामन्यतः दूधारण करने वाली खरगोश को अधिक से अधिक पर्याप्त गुणवत्ता वाले अनाज चाहिए ताकि वह अधिक संख्या मे जन्मे नवजातो (लगभग 8) का दूध पोषण कर सके। दूधारण मादा खरगोश दिन में लगभग 250 ग्राम से अधिक अनाज खा सकती है, जबकि पानी की खपत 3–5 लीटर प्रति दिन भी हो सकती है।

नेस्ट बॉक्स (घोसला):

नवजातो के जन्म के लिए एक उचित स्थान प्रदान किया जाता है। एक नेस्ट बॉक्स को मादा की पिंजरे में मैथुन के 25 दिन बाद रख देना चाहिए। नेस्ट बॉक्स के आगंन मे नेस्टिंग सामग्री जैसे कि महिन चारा, कागज के टुकड़े और महिन लकड़ी की छिलके को रख सकते है। नेस्ट बॉक्स को उपयोग लेने के बाद नेस्ट बॉक्स को साफ और डिसइंफेक्ट करना चाहिये। नेस्ट बॉक्स का आकार नवजातो के शरीर क आकार पर निर्भर करता है जो कि लकडी, धातु, तथा प्लाटिक का हो सकता है। सामन्यतः नेस्ट बॉक्स की 16 इंच लम्बाई, 18 इंच चौडाई तथा 8 इंच ऊचाई होती है।

किंडलिंग (प्रशव):

नवजातो (किट्स) के जन्म को किंडलिंग के रूप में जाना जाता है। खरगोश मे प्रशव आमतौर पर रात के समय होता है और लगभग 15–30 मिनट तक चलता है जो कि जन्म लेने वाले नवजातो की संख्या पर निर्भर करता है। नवजात जन्म के समय अंधे और बाल रहित होते हैं और उनका वजन केवल 30–80 ग्राम तक होता है। बाल के विकास का प्रारंभ लगभग 4 दिन की आयु में होता है और आँखें जन्म के बाद लगभग 10 दिन बाद खुलती हैं। मादा आमतौर पर केवल एक दिन में नवजातो (किट्स) को एक बार दूध पिलाती हैं। नवजातो को 15–21 दिन आयु के बाद नेस्ट बॉक्स से बाहर निकाल देंना चाहिये। किंडलिंग (प्रशव) के समय कुछ सावधानीया बरतनी चाहिये जैसे–

- नवजातो के जन्म के दौरान मादा खरगोश के आस–पास क्षेत्र को ज्यादा संभव हो कि शांत रखे। ताकि मादा खरगोश मे कम से कम तनाव हो और सही से प्रशव हो सके।
- मादा खरगोश को अपने नवजात बच्चो को चाटती और उसे दूध पिलाने दे।

- नवजात को हानिकारक स्थितियों से बचाएं। यदि मादा अपने घोसले के फर्श पर युवानों को जन्म देती है, तो बच्चों को जल्दी से इकट्ठा करें और उन्हें नेस्ट बॉक्स में डालें।
- मादा के पास केवल आठ स्तन होते हैं। इसलिए सलाह दी जाती है कि यदि आठ से अधिक नवजातो का जन्म होता है तो सबसे मजबूत 8 बच्चे का चयन किया जाए और अन्य कमजोर नवजातो को अलग पोषण (फोस्टरिंग) या उनके निषेध/हत्या (कलिंग) के लिए रखा जाए।
- नेस्ट बॉक्स को किंडलिंग (प्रशव) के पहले ही साफ और डिसइंफेक्ट कर लेना चाहिए, जिससे नवजातो एवं नवप्रशव मादा खरगोश को रोगो से बचा कर रख सके।
- जन्म के बाद नवजातो बच्चों की जांच जल्दी से करें ताकि उनको गिनती, बचाव, उपचार तथा मृत नवजातो को हटा दिया जा सके।

नवजातो की देखभालः

- उचित वातावरण का ध्यान जैसे आवाज, तापमान, नमी, और वायु चलन इत्यादि।
- नवजाता को शांत और उनके नेस्ट बॉक्स में रहने दें क्योंकि खरगोश तनावपूर्णता के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।
- सुनिश्चित करें कि नवजात सदा छाया में रहें और सीधे सूर्य किरणें न पहुंच पाएं क्योंकि वे सीधे सूर्य किरणों के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं।
- खरगोश अधिक गरमी के लिए बहुत अधिक संवेदनशील होते हैं। खरगोश के लिए आदर्श तापमान 50–60 डिग्री फारनहाइट रहता है।
- जन्म के बाद नवजातो को निगरानी मे रखना चाहिए जैसे समय–समय पर नवजात का पोषण, उचित वातावरण, परजीवियो से बचाव।
- जन्म के बाद लगभग 20 दिनों के बाद छोटे बच्चे बाहरी खाना शुरू कर सकते हैं।
- पहले 3 सप्ताह के दौरान, छोटे बच्चे के लिए केवल मादा का दूध महत्वपुर्ण होता है।
- मादा को दूध पिलाने साथ ही 2–3 सप्ताह के बाद छोटे बच्चे घास और अनाज का प्रारम्भ कर सकते है।

युवा खरगोशो की प्रबन्धनः

- बड़े खरगोश, बाहरी भोजन पर पूरी तरह से जीने के लिए समायोजित हो जाते हैं।
- छोटे बच्चों (वीनर) को माता अलग करने के बाद (45–70 दिन) उनको के लिए खाने की आवश्यकता 50 ग्राम प्रति दिन होती है, ग्रोअर (71–90 दिन) के लिए 75 ग्राम प्रति दिन होती है।
- **वीनिंगः** माता से 4–6 सप्ताह की उम्र में छोटे बच्चों को अलग करना। सामान्य रूप से बच्चे खरगोश को हटा दिया जाता है और मादा को हच (एक छोटी संरचित पिंजरा या पेन) में छोड़ दिया जाता है। वीनिंग के बाद कुछ दिनों तक सभी छोटे बच्चों को साथ में रखें और फिर धीरे–धीरे उन्हें व्यक्तिगत पिंजरों में अलग करें ताकि वीनिंग के कारण तनाव से बचा जा सके। वीनिंग के समय बच्चों का लिंग **पहचान** और गिनती भी की जाती है।
- **लिंग पहचाननाः** छोटे खरगोशों की वीनिंग के समय लिंग पहचाना जाता है जब लिंग आसानी से भिन्न किए जा सकते हैं।
- **टैटू बनानाः** खरगोश की पहचान के लिए यह आवश्यक है। बाह्य कान के अंदर

स्याही से टैटू बनाना सबसे अच्छा तरीका है। एल्युमिनियम या प्लाटिक टैग का भी उपयोग किया जा सकता है लेकिन इन्हें खरगोश द्वारा बार बार पकड़ने से कान मे घाव हो सकता है।

- **बधियाकरण:** बधियाकरण पुरुष खरगोश के लिए आवश्यक है जिससे खरगोश मे आक्रामक लक्षण स्वभाव पर नियत्रण लाया जा सकता है। जिससे कि लंबे समय तक खरगोशो को एक साथ रखा जा सकता है।
- **नाखून काटना और संवारना:** नाखून काटना और संवारना स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए नियमित अभ्यास है। पिछले अंगों पर टोनाइल हैंडलर के बिना संरक्षित हाथ को खरोंच सकते हैं और जानवर को चोट पहुंचा सकते हैं। इसलिए नाखूनों को नियमित रूप से काटना आव**श्यक हैं**।

खरगोशों को पकड़ने का तरीका:

खरगोश को हमेशा दो हाथों से संभालें, एक हाथ सहारे के लिए और दूसरा नियंत्रण के लिए उपयोग कर सकते हैं। खरगोश को गर्दन के पीछे से ओर खरगोश को उसके कान से न उठाएं, इससे मांसपेशियों ओर चमड़ी खिंचती है जिससे खरोंच और घाव होने की संभावना रहती हैं।

आवास प्रबंध:

मादा **खरगोशों** और बच्चों को आरामदायक उचित स्थान, गर्मी और ठंड, बारिश, पिंजरों की सूखी स्थिति और शिकारी से बचाने एवं उचित वातावरणीय कारको का ध्यान जैसे आवाज, तापमान, नमी, और वायु चलन इत्यादि के लिए **आवास प्रबंध की** महत्वपुर्ण भुमिका है।

आवासीय संरचना: पिंजरे का फर्श आरामदायक होना चाहिए जहां खरगोश आसानी से चल सके। फर्श 1/2 इंच लम्बाई व 1/4 इंच चौडाई तार का होना चाहिए। हार्डवेयर कपड़ा कभी भी इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इससे पैरों में कटने का कारण बनता है। खरगोश के पिंजरे को साफ और पानी और फीड कंटेनर के अलावा अनावश्यक वस्तुओं से मुक्त रखें। बिस्तर सामग्री को नियमित अंतराल पर बदलना चाहिए। सर्दियों में लकड़ी के नेस्ट बॉक्स की सिफारिश की जा सकती है जो सर्दियों में पिंजरे को गर्म करने में मदद करता है। गर्मियों के लिए कार्डबोर्ड या पेगबोर्ड फर्श के साथ तार बॉक्स का उपयोग करें। खरगोश के लिए सामान्य पिंजरे का आकार 3/4 वर्ग फुट प्रति पाउंड परिपक्व शरीर के वजन और पिंजरे की ऊंचाई 18 इंच होनी चाहिए। मादा और बच्चों के मामले में बड़े आकार का अतिरिक्त पिंजरा आवश्यक है। फीडर (खाने का पात्र), पानी, नेस्ट बॉक्स, आराम करने वाले पिंजरे, एक से दुसरी जगह ले जाने वाले पिंजरे खरगोश पालन में उपयोग किए जाने वाले सहायक उपकरण हैं। पैलेट (महिन अनाज की गोलीया) खिलाने के लिए फीडर थाली, कप, छोटी बाल्टी, हॉपर, और घास के लिए वी–आकार, हॉपर आदि हैं। खरगोश के पानी और खानक के लिए हाथ से डालना और स्वचालित विधि का उपयोग किया जाता है। स्वचालित पानी देने में गुरुत्वाकर्षण–आधारित, कठोर या लचीली नली, पुनः संचालित पानी, गर्म केबल शामिल हैं। प्रत्येक पिंजरे में एक निप्पल ड्रिंकर के साथ एक स्वचालित पानी देने की प्रणाली नियमित पीने के पानी के लिए एक आवश्यक प्रावधान है।

आवासीय सुक्ष्म वातावरणीय कारकः

गर्मी से बचाव के लिए अधिकतम वायु प्रवाह की अनुमति दें और सूरज की किरणों से छाया में रखें। खरगोश के घर पर हीट लैंप का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए जब तक तापमान में गंभीर गिरावट की उम्मीद न हो।

उचित कक्ष तापमान	15.5–18.5 डिग्री सेल्सीयस
आर्द्रता	40–45 प्रतिशत
वायु गति	0.3 मीटर प्रति सेकण्ड
वेंटीलेशन	3 मी^{3} प्रति घण्टा प्रति 1 किग्रा शरीर भार
प्रकाश	8–12 घण्टे, 1–2 घण्टे नवजातो के लिये

स्वास्थ्य देखभालः

खरगोश के स्वास्थ्य भौतिकीय पहचानः

मुलायम और चमकदार कोट बिना किसी धब्बे के, सामान्य सतर्कता, चमकती आँखें, स्वतंत्र आंदोलन, सामान्य भूख, संतुलित शरीर, सामान्य विकास, शरीर के किसी भी हिस्से से कोई स्त्राव नहीं, और कोई सूजन और घाव नहीं, सामान्य नाड़ी दर अच्छे स्वास्थ्य के सामान्य संकेत हैं। मंद और उदास, शरीर के वजन में कमी, अत्यधिक बालों का झड़ना, कोई सक्रिय आंदोलन नहीं लेकिन आमतौर पर वे पिंजरे के एक विशेष स्थान पर रहते हैं, भोजन की मात्रा में कमी, शरीर के तापमान और श्वसन दर में वृद्धि, आंख, नाक, मलाशय, और मुंह से पानी या बलगम का स्त्राव खरगोश के रोग के संकेत हैं।

खरगोश के स्वास्थ्य शरीरिक पहचानः

हमें खरगोश के शरीर के मानकों जैसे तापमान, श्वसन दर, नाड़ी स्पदंन दर आदि का नियमित परीक्षण करना चाहिए। स्वस्थ खरगोश की सामान्य श्वसन दर 55 प्रति मिनट, नब्ज दर 135 प्रति मिनट तथा गुदिय तापमान 38. 7–39.1 डिग्री सेल्सीयस होना चाहिये।

खरगोश को होने वाले मुख्य रोगः

रोग	क्लिनिकल संकेत	रोकथाम और उपचार
आंत्रिय कोक्सीडियोसिस (कुकडिया रोग)	युवा खरगोशो में दस्त, अचानक मौत	तार पिंजरा फर्श, भोजन में कोकिडियोस्टेट, सल्फामेजेटिन
कर्ण कैंकर	आंतरिक कान की सूजन, टेढ़ी गर्दन	नियमित कान की सफाई, कण और अन्य बाहरी परजीवियों पर नियंत्रिण, खनिज तेल, आइवरमेक्टिन
यकृतीय कोक्सीडियोसिस	कोई स्पश्ट संकेत नहीं, लेकिन शरीरिक स्थिति खराब हो सकती है।	एंटी–कोक्सीडियल उपचार स्वच्छता, अधिक भीड़ से बचें,
म्यूकोइड आंत्रशोध	युवाओं में मल के बजाय म्यूकोइड सामग्री	फाइबर युक्त आहार
टाइफिलाइटिस	मल में बलगम के साथ दस्त, पोस्ट–मार्टम पर सीकम की सूजन	ऑक्सिटेट्रासाइक्लिन
दीर्घकालिक	छींकना	कान में बेंजीन

राइनाइटिस (नजला)	प्रारंभिक संकेत है, गीला या उलझा हुवे बाल, गंभीर स्नफल निमोनिया में विकसित हो सकता है	हेक्साक्लोराइड
थनैला	स्तन ग्रंथि गर्म और सूजन	एंटीबायोटिक, टीकाकरण
सोर हॉक (जोड़ो मे घाव)	नवजातों के पैरों के नीचे घाव	खुरदरे पिंजरे के फर्श से बचें, एंटीसेप्टिक ड्रेसिंग
पेस्ट्यूरेल्लोसिस (गलाघोटु)	नाक से स्राव, श्वास में कठिनाई (झटकेदार श्वास)	उचित वेंटिलेशन और स्वच्छता, अच्छा पोषण
बलो की गेंद (ट्राइचोबेजार्स)	भूख में कमी, दस्त या कब्ज, पेट में दर्द	हेयर बॉल को पचाने के लिए पाचन एंजाइम का मौखिक प्रशासन, आहार में पर्याप्त विटामिन और खनिज

रोग की रोकथाम: रोग को रोकने के लिए निम्नलिखित उपाय सहायक होते हैं –

- उचित ब्रीडर से खरगोश खरीदें तथा उसके फार्म की सम्पुर्ण जानकारी भी हो जैसे खरगोश की नस्ल, खरगोश के प्रजनन, वृधिदर तथा रोगो का इतिहास इत्यादि।
- नए आगमन और रोग के प्रति संवेदनशील खरगोशों के लिए क्वारंटाइन क्वार्टर स्थापित करना।
- उचित आवास जो जानवर को ठंड, नमी, सूखा, कीट और शिकारीयो के हमले से बचा जा सके।
- पूरी सफाई और हफ्ते में एक बार बाड़ों, इमारत के फर्श और दीवारों, फीडरों और पानी पिलाने वालों और अन्य उपकरणों का कीटाणुशोधन करके स्वच्छता की स्थिति बनाना।
- उत्कृष्ट स्वच्छता और स्वस्थ आहार की आवश्यकता होती है।
- खरगोश के घर के लिए जैव सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण है।
- पशु चिकित्सा विशेषज्ञता और स्वीकृत दवाओं की उपलब्धता
- हम कुछ टीकों को प्राथमिकता दे सकते हैं – 10 सप्ताह की उम्र में मिक्सोमैटोसिस वैक्सीन, गर्भवती मादा को इससे बचना चाहिए, वी एच डी (वायरल हिमेरिजीक रोग) वैक्सीन, मिक्सोमैटोसिस वैक्सीन के 2 सप्ताह बाद दी जाती है।

निष्कर्ष:

खरगोश पालन के अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के लिए, जानवर पूरी तरह से जानवरों की देखभाल और फार्म प्रबंधन पर निर्भर करता है, जैसे संतुलित आहार, पर्याप्त साफ पानी, पिंजरे और घर की सफाई, उचित वेंटिलेशन, तापमान और आर्द्रता, उचित संचालन, प्रजनन और रोग के संकेत का शीघ्र पता लगाना इत्यादि सम्मेलित हैं। गर्भवती खरगोश एवं नवजातो के लिये सभी ऋतुओ के अनुसार आवास तथा अनुकूल वातावरण का प्रबधंन, विभिन्न अवस्थाओ के अनुसार पोशण व्ययस्था, दैनिक रखरखाव एवं समय समय पर शारीरिक स्वास्थ्य तथा व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान बहुत महत्वपूर्ण है।